IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

कबीरा खड़ा बाजार में नाटक में धार्मिक दृष्टिकोण

Dr. Chandni Keshavpuri Goswami
Assistant Professor, Department of Hindi
D. K. V. College, Jamnagar, Gujarat, India

मध्यकालीन कवि कबीर अपने समय से हटकर दार्शनिक और क्रांतिकारी विचारधारा के लिए प्रसिद्ध हैं | कबीर का लेखन आधुनिक समय में भी प्रस्तुत है | भीष्म साहनी द्वारा रचित 'कबीरा खड़ा बाज़ार' में नाटक कवि कबीर के व्यक्तित्व और विचारधारा को लेकर लिखा गया है | जिसमें कबीर का पात्र अलमस्त, फक्कड़, मस्तमौला, बड़बोला है, जो किसी परिणाम की चिंता किये बगैर खरी - खरी कहता है | विद्रोही कबीर अपने समय के दो प्रमुख धर्म हिन्दु - मुस्लिम से हटकर मानवधर्म के पक्षधर हैं | वह परम्परावादी रूढ़ी वादी विचारधारा, अंधश्रद्धा- कुप्रथा युक्त रूग्ण विचारधारा और असमानता के बदले समन्वयवादी विचारधारा को लेकर उभरे हैं | सत्ता का तानाशाही रूप और दलित और शोषित वर्ग की लाचारी, धर्म के नाम पर उन पर हो रहे अत्याचार और शोषण को इस उपन्यास में भीष्मजीने मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है | धार्मिक असमानता, आडम्बर और अंधश्रद्धा के कारण दबे - कुचले वर्ग का शोषण यहाँ दर्शाया गया है | दुःख की बात है की मध्यकालीन कवि कबीर के समय का सामाजिक परिवेश और वर्तमान परिवेश में कोई विशेष अंतर नहीं आया है, आज भी धार्मिक संकीर्ण विचारधारा ज्यों की त्यों है | लोग पूजा - पाठ, कर्मकांड, आज़ान को ही ईश्वर तक पहुंचने का रास्ता मान बैठते है और साधु - मौलविओं द्वारा सिखलाई धर्म की परिभाषा से हटकर कुछ नहीं सोच सकते, पर इस नाटक में कबीर धर्म के ठेकेदारों से उलझते नज़र आते है | कबीर जन्म से हिन्दू हैं और इनका पालन - पोषण मुस्लिम जुलाहा परिवार में हुआ है | कबीर अपनी मां से कहता है " कोई हिन्दू पूछेगा तो कहूंगा ब्राह्मणी का बेटा हूँ, कोई तुर्क पूछेगा तो कहूंगा, नीमा मुस्लमानीन का बेटा हूँ यही न ? इसमें हिन्दू भी कोड़े नहीं मारेंगे तुर्क भी कोड़े नहीं मारेंगे | "[१]

संदर्भ सूची :

[1].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.३०
[2].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.३२
[3].यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त,पृ.०६
[4].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.३५
[5].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.३६
[6].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.३६
[7].काव्य तारा, सं. बद्रीनाथ तिवारी , राजेंद्र प्रसाद सिंह, पृ.२१
[8].रश्मिरथी, दिनकर , पृ १३
[9].कबीर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ.२४६
[10].कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.४९

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

[11]. कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.५०

[12]. कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.५१

[13]. कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.५५

[14]. कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.५६

[15]. कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.८१

[16]. कबीरा खड़ा बाजार में ,भीष्म साहनी, पृ.८१

[17]. कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.८१

[18]. कबीरा खड़ा बाज़ार में,भीष्म साहनी, पृ.१२६

[19]. कबीरा खड़ा बाजार में, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली |

[20]. कबीर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज। नई दिल्ली |

[21]. काव्य तारा, सं. डॉ. बद्रीनाथ तिवारी, डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह |

[22]. रश्मिरथी, रामधारीसिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद |

[23]. यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त,तृतीय आवृत्ति, साहित्य प्रेस,चिरगांव |